by : Directorate of Education, Delhi

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र

इतिहास

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश :

(1) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिये गए हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने लिखे हैं।

(2) 2 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर (खण्ड 'क' – प्रश्न सं. 1 से 3) 30 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

(3) 5 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर (खण्ड 'ख' – अनुभाग I से IV – प्रश्न सं. 4 से 11) 100 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

(4) 10 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर (खण्ड 'ग' – प्रश्न सं. 12 एवं 13) 350 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

(5) खंड 'घ' के प्रश्न तीन स्रोतों पर आधारित हैं।

(6) मानचित्र अपनी उत्तर–पुस्तिका के साथ संलग्न कीजिए (खण्ड 'ङ')।

खण्ड 'क'

निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हड़प्पा बस्तियों के विभाजित दो भागों के नाम व उनकी किसी एक मुख्य विशेषता का उल्लेख कीजिए। 2

2. बर्नियर ने मुग़ल शासन के अंतर्गत शिल्पकारों की जटिल सामाजिक वास्तविकता का वर्णन किस प्रकार किया है? कोई एक कारण स्पष्ट कीजिए। 2

3. हिल स्टेशनों की स्थापना क्यों की गई? स्पष्ट कीजिए। 2

खण्ड 'ख'

भाग - I

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

4. "मोहनजोदड़ो का सबसे अनूठा पहलू शहरी केन्द्रों का विकास था।" इस कथन की उदाहरणों सहित पुष्टि कीजिए। 5
5. 'मनुस्मृति' में दिए चाण्डालों के कर्तव्यों की समालोचना कीजिए। 5
6. बुद्ध की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए। 5

भाग - II

निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :

7. "कृष्णदेव राय के शासन की चारित्रिक विशेषता विस्तार और सुदृढ़ीकरण थी।" इस कथन का, साक्ष्यों के आधार पर, औचित्य निर्धारित कीजिए। 5
8. सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दियों में ग्राम पंचायतों के कार्यों का वर्णन कीजिए। 5

भाग - III

निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :

9. 1861 में अमेरिका में गृहयुद्ध छिड़ने से भारतीय किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा? व्याख्या कीजिए। 5
10. उन साक्ष्यों के बारे में चर्चा कीजिए जिनसे पता चलता है कि विद्रोही योजनाबद्ध और समन्वित ढंग से काम कर रहे थे? 5

भाग - IV

दिए गए 'मूल्य आधारित' अनुच्छेद को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

11. मुगल इतिवृत्त साम्राज्य को हिन्दुओं, जैनों, ज़रतुश्तियों और मुसलमानों जैसे अनेक भिन्न-भिन्न नृजातीय और धार्मिक समुदायों को समाविष्ट किए हुए साम्राज्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। सभी तरह की शांति और स्थायित्व के स्रोत के रूप में बादशाह सभी धार्मिक और नृजातीय समूहों से ऊपर होता था, इनके बीच मध्यस्थता करता था

तथा यह सुनिश्चित करता था कि न्याय और शांति बनी रहे। अबुल फ़ज़्ल सुलह–ए–कुल (पूर्ण शांति) के आदर्श को प्रबुद्ध शासन की आधार शिला बताता है।

(1) मुगलों के अधीन अभिजात वर्ग की संरचना स्पष्ट कीजिए तथा यह भी बतायें कि उनके पद किस बात पर निर्भर करते थे? 2

(2) वर्तमान काल में सुलह–ए–कुल की अवधारणा भारत की पंथ–निरपेक्षता के संदर्भ में कहाँ तक सार्थक की जा सकती है? स्पष्ट कीजिए। 3

खण्ड 'ग'

12. विजय नगर की भौगोलिक स्थिति के विषय में चौंकाने वाले तथ्य, इसकी जल संपदा तथा किलेबन्दियों की व्याख्या कीजिए। 10

अथवा

मुग़ल कालीन भारत में पांडुलिपियों की रचना किस प्रकार की जाती थी? स्पष्ट कीजिए।

13. असहयोग आंदोलन के कारण व इसके भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान की समीक्षा कीजिए। गाँधी जी ने ख़िलाफ़त को इसके साथ क्यों जोड़ा? स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

भारत का बँटवारा एक सांप्रदायिक राजनीति का आखिरी बिंदु कैसे था जो बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में शुरू हुआ? स्पष्ट कीजिए।

खण्ड 'घ'

स्रोत आधारित प्रश्न

निम्नलिखित अनुच्छेदों (प्रश्न सं. 14–16) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनके अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

14. **सीमाओं का महत्व**

मनुस्मृति आरंभिक भारत का सबसे प्रसिद्ध विधिग्रंथ है। इसे संस्कृत भाषा में दूसरी शताब्दी ई. पू. और दूसरी शताब्दी ई. के बीच लिखा गया था। इस ग्रंथ में राजा को यह

सलाह दी गई है :

चूँकि सीमाओं की अनभिज्ञता के कारण विश्व में बार–बार विवाद पैदा होते हैं इसलिए उसे सीमाओं की पहचान के लिए गुप्त निशान जमीन में गाड़ कर रखने चाहिए जैसे कि पत्थर, हड्डियाँ, गाय के बाल, भूसी, राख, खपटे, गाय के सूखे गोबर, ईंट, कोयला, कंकड़ और रेत। उसे सीमाओं पर इसी प्रकार के और तत्व भूमि में छुपाकर गाड़ने चाहिए, जो समय के साथ अपक्षय नहीं होते।

(1) विश्व में बार–बार सीमा विवाद क्यों पैदा होते हैं? स्पष्ट कीजिए। 2

(2) सीमा समस्याओं को सुलझाने के रास्तों को स्पष्ट कीजिए। 3

(3) क्या भारत इस समय किसी सीमा समस्या का सामना कर रहा है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

स्वजन के मध्य लड़ाई क्यों हुई?

यह उद्धरण संस्कृत महाभारत के आदिपर्वन् (प्रथम अध्याय) से है और कौरव पांडव के बीच हुए संघर्ष का चित्रण करता है :

कौरव धृतराष्ट्र के पुत्र थे और पांडव उनके बांधव जन थे। चूँकि धृतराष्ट्र नेत्रहीन थे अतः उनके अनुज पांडु हस्तिनापुर के सिंहासन पर आसीन हुए। किंतु पांडु की असामयिक मृत्यु के बाद धृतराष्ट्र राजा बने, क्योंकि सभी राजकुमार अल्पवयस्क थे। जैसे–जैसे राजकुमार बड़े हुए हस्तिनापुर के नागरिक पांडवों के प्रति अपनी अभिरुचि व्यक्त करने लगे क्योंकि वे कौरवों के मुकाबले अधिक योग्य और सदाचारी थे। इस बात से कौरवों में ज्येष्ठ, दुर्योधन को बहुत ईर्ष्या हुई। वह अपने पिता के पास गया और बोला, "हे भूपति, अपूर्णता के कारण आपको सिंहासन पर बैठने का अधिकार नहीं था हालाँकि यह आपको प्राप्त हो गया। यदि पांडव पांडु से यह विरासत प्राप्त करते हैं तो उनके बाद उनके पुत्र, पौत्र और फिर प्रपौत्र इस पैतृक संपत्ति के अधिकारी हो जाएँगे और हम तथा हमारे पुत्र इस राज्य के उत्तराधिकार से बेदखल होकर संसार में क्षुद्र समझे जाएँगे।"

इस तरह के उद्धरण अक्षरशः सत्य न भी हों तो भी वे इस बात का अनुमान करा देते हैं कि जिन लोगों ने यह ग्रंथ लिखा वे क्या सोचते थे। कभी–कभी, जैसे यहाँ प्रकरणों में

परस्पर विरोधी विचार मिलते हैं।

(1) हस्तिनापुर के नागरिक पांडवों के प्रति अपनी अभिरुचि क्यों व्यक्त करने लगे? 2

(2) पांडवों के प्रति दुर्योधन की प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए। 3

(3) पितृवंशिक उत्तराधिकार के आधार की व्याख्या कीजिए। 3

15. **देहली**

चित्र : तुगलकाबाद, दिल्ली का एक मेहराब।

दिल्ली, जिसे तत्कालीन ग्रंथों में अक्सर देहली नाम से उद्धृत किया गया था, का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है :

दिल्ली बड़े क्षेत्र में फैला घनी जनसंख्या वाला शहर है। शहर के चारों ओर बनी प्राचीर अतुलनीय है, दीवार की चौड़ाई ग्यारह हाथ (एक हाथ लगभग 20 इंच के बराबर) है; और इसके भीतर रात्रि के पहरेदार तथा द्वारपालों के कक्ष हैं। प्राचीरों के अदर खाद्यसामग्री, हथियार, बारूद, प्रक्षेपास्त्र तथा घेरेबंदी में काम आने वाली मशीनों के संग्रह के लिए भंडारगृह बने हुए थे। प्राचीर के भीतरी भाग में घुड़सवार तथा पैदल सैनिक शहर के एक से दूसरो छोर तक आते-जाते हैं। प्राचीर में खिड़कियाँ बनी हैं जो शहर की ओर खुलती हैं और इन्हीं खिड़कियों के माध्यम से प्रकाश अंदर आता है। प्राचीर का निचला भाग पत्थर से बना है जबकि ऊपरी भाग ईंटों से। इसमें एक-दूसरे के पास-पास बनी कई मीनारें हैं। इस शहर के अट्ठाईस द्वार हैं जिन्हें दरवाज़ा कहा जाता है और इनमें से बदायूँ दरवाजा सबसे विशाल है; मांडवी दरवाजे के भीतर एक अनाज मंडी है; गुल दरवाजे की बगल में एक फलों का बगीचा है। इस (देहली शहर) में बनी कब्रों पर गुंबद नहीं है उनमें

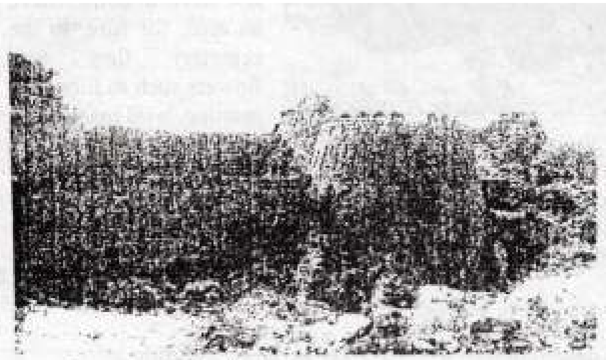

चित्र : बस्ती की किलेबंदी की दीवार का एक हिस्सा।

निश्चित रूप से मेहराब है। कब्रगाह में कंदाकार चमेली तथा जंगली गुलाब जैसे फूल उगाए जाते हैं; और फूल सभी मौसमों में खिले रहते हैं।

(1) उप–महाद्वीप के नगरों का वर्णन इब्न बतूता ने किस प्रकार किया है? 2

(2) उसके द्वारा दिल्ली का दिया गया विवरण क्या था? 4

(3) आज की दिल्ली में आए किन्हीं चार परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए। 2

अथवा

एक ईश्वर

यह रचना कबीर की मानी जाती है :

हे भाई यह बताओ, किस तरह हो सकता है
कि संसार के एक नहीं दो स्वामी हों?
किसने तुम्हें भ्रमित किया है?
ईश्वर को अनेक नामों से पुकारा जाता है : जैसे अल्लाह, राम, करीम, केशव, हरि तथा हजरत।
विभिन्नताएँ तो केवल शब्दों में हैं जिनका आविष्कार हम स्वयं करते हैं।
कबीर कहते हैं दोनों ही भुलावे में हैं।
इनमें से कोई एक राम को प्राप्त नहीं कर सकता।
एक बकरे को मारता है और दूसरा गाय को।
वे पूरा जीवन विवादों में ही गँवा देते हैं।

(1) जो कबीर की बानी मानी जाती है, वह किन ग्रंथों में संकलित हैं? किन्हीं दो के नाम लिखिए। 2

(2) कबीर ने 'परम सत्य' को किस प्रकार वर्णित किया है? 2

(3) उन्होंने विभिन्न संप्रदायों के संसार के स्वामियों के प्रति क्या तर्क दिए, उनकी व्याख्या कीजिए। 2

(4) क्या आप कबीर के विचारों से सहमत हैं? आप अपने विचार भी प्रस्तुत कीजिए। 2

16. **पाँचवीं रिपोर्ट से उद्धृत**

जमींदारों की हालत और जमीनों की नीलामी के बारे में पाँचवीं रिपोर्ट में कहा गया है :

राजस्व समय पर नहीं वसूल किया जाता था और काफ़ी हद तक जमीनें समय-समय पर नीलामी पर बेचने के लिए रखी जाती थीं। स्थानीय वर्ष 1203, तदनुसार सन् 1796-97 में बिक्री के लिए विज्ञापित जमीन की निर्धारित राशि (जुम्मा) 28,70,061 सिक्का रु. थी और वह वास्तव में 17,90,416 रु. में बेची गई और 14,18,756 रु. की राशि जुम्मा के रूप में प्राप्त हुई। स्थानीय संवत 1204, तदनुसार सन् 1797-98 में 26,66,191 सिक्का रु. के लिए जमीन विज्ञापित की गई। 22,74,076 सिक्का रु. की ज़मीन बेची गई और क्रय राशि 21,47,580 सिक्का रु. थी। बाकीदारों में कुछ लोग देश के बहुत पुराने परिवारों में से थे। ये थे : नदिया, राजशाही, बिशनपुर (सभी बंगाल के ज़िले) आदि के राजा। साल दर साल उनकी जागीरों के टूटते जाने से उनकी हालत बिगड़ गई उन्हें ग़रीबी और बरबादी का सामना करना पड़ा और कुछ मामलों में तो सार्वजनिक निर्धारण की राशि को यथावत बनाए रखने के लिए राजस्व अधिकारियों को भी काफी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं।

(1) पाँचवीं रिपोर्ट के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 2

(2) उक्त रिपोर्ट के संदर्भ में भारतीय ज़मींदारों की अवस्था स्पष्ट कीजिए। 3

(3) "पाँचवीं रिपोर्ट में परंपरागत ज़मींदारों की सत्ता के पतन का वर्णन अतिरंजित है।" इस कथन के समर्थन के दीजिए। 3

अथवा

असामान्य समय में सामान्य जीवन

विद्रोह के महीनों में शहरों में क्या हुआ? उथल-पुथल के उन दिनों में लोग अपनी जिंदगी कैसे जी रहे थे? सामान्य जीवन किस तरह प्रभावित हुआ? विभिन्न शहरों की रिपोर्टों से पता चलता है कि सामान्य गतिविधियाँ अस्त-व्यस्त हो गई थीं। दिल्ली उर्दू अख़बार, 14 जून 1857 की इन रिपोर्टों को पढ़िए :

यही हालत सब्जियों और साग (पालक) के भी हैं। लोग इस बात पर शिकायत कर रहे हैं कि बाज़ारों में कद्दू और बैंगन तक नहीं मिलते। आलू और अरबी अगर मिलती भी हैं तो बासी, सड़ी जिसे कुँजड़ों (सब्जी बेचने वाले) ने रोक कर

(जमाकर) रखा हुआ था। शहर में स्थित बाग–बगीचों से कुछ माल चंद इलाकों तक पहुँच जाता है लेकिन ग़रीब और मध्यवर्ग वाले उन्हें देखकर बस होठों पर जीभ फिरा कर रह जाते हैं (क्योंकि वे चीज़ें खास लोगों के लिए ही हैं)।

यहाँ एक और चीज़ पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे लोगों को बड़ा नुकसान हो रहा है। मामला यह है कि पानी भरने वालों ने पानी भरना बंद कर दिया है। गरीब शुरफा (कुलीन लोग) खुद घड़ों में पानी भरकर लाते हैं और तब जाकर घर में खाना बनता है। हलालख़ोर हरामख़ोर हो गए हैं। कई दिनों में बहुत सारे मोहल्लों में कोई आमदनी नहीं हुई है और यही हालात बने रहे तो गंदगी, मौत और बीमारियाँ शहर की आबो–हवा खराब कर देंगी और शहर महामारी की गिरफ़्त में आ जाएगा, यहाँ तक कि आस–पास के इलाक़े भी उसकी चपेट में आ जाएँगे।

(1) 1857 के विद्रोह के महीनों में दिल्ली शहर में क्या हुआ था? स्पष्ट कीजिए। 2

(2) उथल–पुथल के उन दिनों में लोग अपनी जिंदगी किस प्रकार जी रहे थे? 3

(3) लोगों की सामान्य दैनिक जीवन की गतिविधियाँ किस प्रकार अस्त–व्यस्त हुईं? स्पष्ट कीजिए। 3

खण्ड 'ङ'

17. भारत के दिए गए रेखा मानचित्र पर :

(अ) 1857 के विद्रोह के तीन महत्वपूर्ण स्थान 1, 2, 3 अंकित किए गए हैं। उन्हें पहचानिए और उनके नाम उनके समीप खींची गई रेखा पर लिखिए। 3

(ब) मगध और बीजापुर को उपरोक्त मानचित्र पर चिह्नित कीजिए और उनके नाम लिखिए। 2

18. निर्देश : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिहीन परीक्षार्थियों के लिए मानचित्र संख्या 17 के स्थान पर है।

(अ) किसी एक महत्वपूर्ण विकसित हड़प्पा पुरास्थल का नाम लिखिए।

(ब) बाबर, अकबर और औरंगज़ेब के अधीन किसी एक राज्य/नगर का नाम लिखिए।

(स) भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के किसी एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र का नाम लिखिए।

(द) किसी एक महाजनपद का नाम लिखिए।

(य) हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित साम्राज्य का नाम लिखिए। 5

by : Directorate of Education, Delhi

भारत का रेखा-मानचित्र (राजनीतिक)

Outline Map of India (Political)

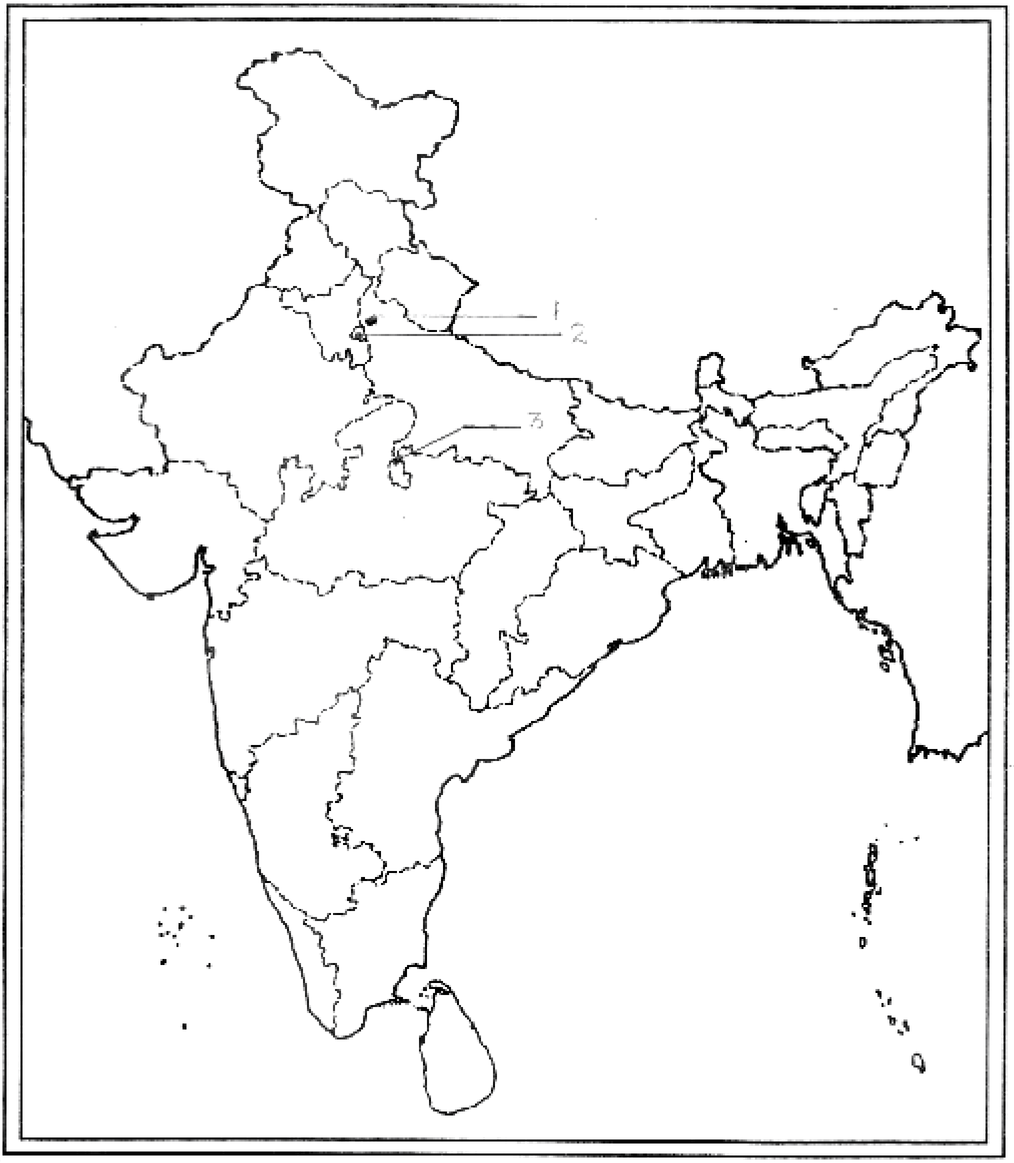

अंक योजना

(Marking Scheme)

अधिकतम अंक : 80

खण्ड 'क'

प्रश्न 1. i) हड़प्पा बस्तियों के विभाजित दो भागों के नाम – 2

(अ) दुर्ग (ब) निचला शहर

ii) विशेषता–

i) दुर्ग को दीवार से घेरा गया था।

अथवा

निचला शहर भी दीवार से घेरा गया था।

प्रश्न 2. i) शिल्पकारों के पास अपने उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था। राज्य के द्वारा मुनाफ़े का अधिग्रहण किए जाने के कारण उत्पादन में गिरावट आ रही थी।

प्रश्न 3. i) ब्रिटिश सेना की जरूरतों के लिए। 2

ii) हिल स्टेशनों की जलवायु यूरोप की ठंडी जलवायु के अनुकूल थी। (1+1)

iii) हिल स्टेशन औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे।

(कोई दो बिन्दु (Point)

खण्ड 'ख' (भाग – 1)

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–

i) शहरी केन्द्रों का विकस के रूप में मोहनजोदड़ो सबसे पुराना पुरास्थल।

5 (1+1+1+1+1)

ii) बस्ती का दो भागों में विभाजन

iii) दुर्ग

iv) निचला शहर

v) बेहतरीन नियोजन

प्रश्न 5. i) उन्हें गाँव से बाहर रहना होता था। 5 (1+1+1+1+1)

ii) उन्हें फेंके हुए बर्तनों का प्रयोग करना पड़ता था।

iii) उन्हे संबधियों से विहीन मृतकों की अंत्येष्टि करनी पड़ती थी।

iv) इतिहासकारों ने अब्राहमणीय ग्रथों में चिन्नित चाण्डालों के जीवन का विश्लेषण किया है।

v) अब्राहमणीय ग्रंथों तथा ब्रहमणीय ग्रंथों में चिंत्रित सामाजिक वास्तविकता।

प्रश्न 6. i) सुत्त पिटक में बुद्ध की शिक्षाओं को पुर्नार्निमित किया गया। 5 (1+1+1+1+1)

ii) बौद्ध दर्शन के अनुसार विश्व अनित्य है।

iii) दुख मनुष्य के जीवन का अंतर्निहित तत्व है।

iv) मध्यम मार्ग द्वारा दुखों से मुक्ति।

v) सहायक कर्म तथा निर्वाण।

भाग – 11

निम्नलिखित में से किन्हीं एक प्रश्न के उत्तर दीजिए:– 5 (1+1+1+1+1)

प्रश्न 7. i) शुद्धकला प्रभावशाली अश्वसेना पर आधारित थी। सागारिक तैयारी ।

ii) विस्तार तथा सुदृढ़ीकरण हेतु 1512 में रायचूर दो आब पर अधिकार।

iii) 1514 में उड़िसा के शासकों का दमन।

iv) 1520 में बीजापुर के सुल्तान को पराजित करना।

v) राज्य में शांति तथा समृद्धि के ज़रिए विकास। 5 (1+1+1+1+1)

प्रश्न 8. i) अनेक सामुदायिक कार्य करना। 5 (1+1+1+1+1)

ii) गाँव में रहने वाले पृथक – पृथक समुदायों के लोग अपनी जाति की सीमाओं में रहें।

iii) जुर्माना लगाने तथा समुदाय से निष्कासित करने का अधिकार।

iv) जातिगत रिवाजों की अवहेलना रोकना।

v) पंचायत का निर्णय सभी गाँव वालों को मानना पड़ता था।

भाग – 111

निम्नलिखित में से किसीं एक प्रश्न के उत्तर दीजिए:– 5 (1+1+1+1+1)

प्रश्न 9. i) अमेरिका से कच्ची कपास में गिरावट के कारण।

ii) भारत से कपास का अधिक मात्रा में निर्यात।

iii) कपास की कीमतों में उछाल का दक्कन के देहाती इलाकों में प्रभाव।

iv) बम्बई दक्कन में कपास का उत्पादन अधिक होने लगा।

v) सभी कपास उत्पादकों की हालत बेहतर न हो सकी। 5 (1+1+1+1+1)

प्रश्न 10. i) पृथक – पृथक स्थानों पर विद्रोह के तौर – तरीकों में समानता।

ii) छावनियाँ के सिपाहियों के बीच बेहतर संचार तथा ताल–मेल।

iii) इतिहासकार चार्ल्स बॉल के अनुसार देशी अफसरों की पंचायतें कानपुर सिपाही

iv) विद्रोह के संदेशवाहकों के रूप में आम लोगों तथा धार्मिक लोगों को भूमिका।

v) उत्तर भारत के गाँवों से चपातियाँ बँटने की खबरें आ रही थी।

भाग – IV

प्रश्न 11.

(i) अ) अभिजात–वर्ग की भर्ती अनेक नृ–जातीय तथा धार्मिक समूहों से की जाती थी।

ब) अभिजात – वर्ग के पद बादशह के प्रति वफ़ादारी पर निर्भर रहते थे।

ii) अ) अबुल फ़जल के अनुसार सुलह – ए – कुल (पूर्ण शांति) का आदर्श प्रबुद्ध की आधारशिला था।

ब) सुलह – ए – कुल में तमाम धर्मो तथा मतों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता थी।

स) सुलह – ए – कुल तथा पंथ – निरपेक्षता धार्मिक स्वंतत्रता तथा अभिव्यक्ति के पक्षधर हैं। दोनों ही अवधारणाएँ आपसी मेल–जोल तथा शांति की हिमायत करती हैं। भारत जैसे बहु–आयामी तथ विविधतापूर्ण देश को सूत्रवद्ध के लिए पंथ–निरपेक्षता एक शाश्वत सेतु है।

भाग – ग'

प्रश्न 12. 10(2+2+2+2+2+2)

i) तुंगभद्रा नदी द्वारा निर्मित एक प्राकृतिक कुण्ड विजयनगर की भौगोलिक स्थिति के विषय में सर्वाधिक आश्चर्य में डालने वाला तथ्य है।

ii) हिरिया नहर एक महत्वपूर्ण जल संबंधी संरचना थी, जिसके भग्नावेष आज भी मौजूदा हैं।

iii) अब्दूर प्रभावित हुआ।

iv) कृषि – क्षेत्रों को कि़लेबंद भूभाग में समाहित करना।

v) कि़लेबंदी द्वारा नगरीय केन्द्र तथा शासकीय केन्द्र को घेरा गया था।

अथवा

i) शाही किताबख़ाना पांडुलिपि की रचना का प्रमुख केन्द्र था।

ii) पांडालिपि की रचना में विविध प्रकार के कार्य करने वाले अनेक लोग होते थे।

iii) पांडुलिपि को एक मूल्यवान स्तिु, बौद्धिक संपदा तथा सौंदर्य के कार्य के रूपा में देखा जाता था।

iv) पांडुलिपियों की वास्तविक रचना के कार्य में लगे हुए व्यक्तियों को पदतियाँ तथा पुरस्कारों से नवाजा जाता था।

v) सुलेखन की कला अत्यन्त महत्वपूर्ण कौशल समझी जाती थी। अकबर की पसंदीदा शैली नस्तलिक थी। काशमीर के मुहम्माद हुसैन इस शैली के सबसे अच्छे सुलेखकों में से एक थे।

प्रश्न 13. 10(4+3+3)

(1) i) चंपारन, अहमदाबाद तथा खेड़ा के अभियानों ने गाँधी जी को एक राष्ट्रवादी के रूप में स्थापित कर दिया जिनमें गरीबों के लिये अपार, सहानुभूति तथा संवेदना थी।

ii) 'रॉलेट एक्ट' तथा 'जालियाँवाला बाग' हत्याकांड ने गाँधी जी को अग्रिम पंक्ति का राष्ट्रीय नेता बना दिया। 'अंग्रेजी शासन के ख़िलाफ़ गाँधी जी ने असहयोग अभियान की माँग कर दी।

iii) असहयोग आंदोलन भारत की जनता की राजनीतिक परिपक्वता तथा विरोध का संकेत था।

(2) iv) खिलाफ़त आंदोलन (1919–20) मुहम्मद अली तथा शौकत अली के नेतृत्व में भारतीय मुसलमानों का एक आंदोलन था। इस आंदोलन के अनेक प्रमुख माँगे थीं।

v) गाँधी जी हिंदू–मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे उनका मत था कि असहयोग आंदोलन को खिलाफ़त आंदोलन के साथ मिलाने से औपनिवेशिक शासन का अंत हो जायेगा।

vi) असहयोग तथा खिलाफ़त आंदोलन ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में एक राजनैतिक भूचाल ला दिया। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की नींव हिलने लगी।

(3) i) असहयोग आंदोलन वस्तुतः ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के समक्ष एक ऐसा विस्मयकारी राजनीतिक प्रयोग था जिसका अनुभव अंग्रेज़ों को अपने तमाम साम्राज्यवादी शासन में पहली बार हुआ।

ii) विद्यार्थियों, वकीलों, श्रमिकों, किसानों तथा जनजतियों की सक्रिय हिस्सेदारी ने इसे जन–आंदोलन बना दिया था। लुई फिशर के अनुसार,"असहयोग भारत और गाँधी जी के जीवन के एक युग का ही नाम हो गया। असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक किंतु

प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था। इसके लिए प्रतिवाद, परित्याग और स्व–अनुशासन आवश्यक थे। यह स्वशासन के लिए प्रशिक्षण था।''

अथवा

10(2+2+2+2+2)

i) मुस्लिम लीम द्वारा केबिनेट मिशन योजना से समर्थन वापस लेने के बाद पाकिस्तान की माँग को अमली जामा पहनाने के लिए 16 अगस्त 1946 को ''प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस'' मनाने का फैसला लिया गया।

ii) 16 अगस्त 1946 को कलकत्ता में साम्प्रदायिक देगा भड़क गया जो कई दिनों तक चलता रहा। इस देगे में हज़ारों लोग मारे गए।

iii) साम्प्रादायिकता का ज़हर लगातार फैलता गया भारतीय सिपाही तथा पुलिस वाले भी हिंदू, मुसलमान या सिख के रूप में आचरण करने लगे। अनेक स्थानों पर न केवल पुलिस वालों न अपने धर्म के लोगों की मदद की वरन् दूसरे समुदायों पर भी हमले किए।

iv) साम्प्रदायिकता के कारण जो भारी नरसंहार हो रहा था उस पर नियंत्रण करने कमे लिए कांग्रेस विभाजन को एक 'अनिवार्य विकृति' के रूप में स्वीकार कर लिया गया। मार्च 1947 में कांग्रेस हाई कमान ने पंजाब को मुस्लिम–बहुल तथा हिंदू / सिख बहुल, दो हिस्सों मामले में भी यही सिद्धांत अपनाने का सुझाव दिया गया।

v) अनेक इतिहासकार देश के विभाजन को एक ऐसी साम्प्रादायिकता राजनीति का आखिरी बिंदु मानते हैं जिसकी शुरुआत 20 वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में हुई। 1909 तथा 1919 के अधिनियमों ने मुसलमानों के लिए पृथक चुनाव क्षेत्रों का प्रावधान कर साम्प्रदायिक खाई को और चौड़ा कर दिया था। जिसके कारण धार्मिक अस्मिताँए समुदायों के मध्य हो रहे विरोधों से जुड़ गई। वस्तुत साम्प्रदायिक राजनीति धार्मिक पहचान को बुनियादी तथा अटल मानती है। इस प्रकार साम्प्रदायिकता धार्मिक आस्मिता का घोर राजनीतिकरण है जो धार्मिक समुदायों में झगड़े पैदा करवाने के प्रयत्न करता है।

खण्ड 'घ'

14.

(1) i) विश्व में सीमा विवादों का एक मुख्य कारण विभिन्न देशों के बीच आपसी विवाद तथा अन्तराष्ट्रीय सद्‌भावना का अभाव है।

ii) यद्यपि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद साम्रज्यवादी ताकतों का खात्मा हो गया तथापि साम्राज्यवादी आकांक्षाएं अभी भी अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

(2) i) आपसी बात–चीट के द्वारा।

ii) ऐतिहासिक तथा व्यावहारिक साक्ष्यों के आधार पर।

iii) अन्तराष्ट्रीय कानूनों के परिप्रेक्ष्य में।

(3) i) भारत का चीन के साथ सीमा विवाद है।

ii) भारत का पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद है।

iii) भारत का बांग्ला देश के साथ सीमा विवाद है।

अथवा

(1) i) पांडव कौरवों की अपेक्षा अधिक योग्य थे।

ii) पांडव नैतिकता तथा सदाचार के पक्षधर थे।

(2) i) हस्तिनापुर के नागरिक पांडवों के प्रति अभिरूचि व्यक्त करने लगे जिससे दुर्योधर को ईर्ष्या हुई।

ii) दुर्योधन ने अपने चिंता से रोष प्रकट किया।

iii) उसने कहा कि हम तथा हमारे पुत्र इस राज्य के उत्तरधिकार से बेदखल होकर संसार में क्षुद्र समझे जायेंगे।

(3) i) पितृवंशिकता में पुत्र पिता की मृत्यु के बाद उसके संसाधनों पर अधिकार जमा सकते थे।

ii) राजाओं के संदर्भ में सिंहासन पर अधिकार जमाया जाता था।

iii) ज्यादातर राजवंश (लगभग छठी शताब्दी ई.पू.से) पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते थे।

(15)

(1) i) इब्न बतूता उपमहद्वीप के नगरों को उन लोगों के लिए अत्याधिक अवसरों से भरपूर पाया जिनके पास आवश्यक इच्छा, साधन तथा कौशल मौजूद था

ii) ज्यादातर नगरों में भीड़-भाड़ वाली सड़के तथा चमक-दमक वाले विभिन्न वस्तुओं से भरे रंगीन बाजार थे।

(2) i) दिल्ली बड़े क्षेत्र में फैला धनी आबादी वाला शहर है।

ii) शहर के चारों तर्फ बनी प्राचीर लाज़वाब है।

iii) दिल्ली शहर के 28 द्वार हैं, जिन्हें दरवाजा कहा जाता है।

iv) शहर में एक बेहतरीन क़ब्रगाह है जिसमें बनी क़ब्रों के ऊपर गुंबद बनाई गई है।

(3) i) राजतंत्रीय व्यवस्था के स्थान पर लोकतंत्रीय व्यवस्था है।

ii) नागरिकों को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समानता हासिल है।

iii) आधुनिक स्थापात्य कला के नए आयाम मौजूद हैं।

iv) वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक विकास ने दिल्ली की पूर्णता बदल दिया है।

अथवा

(1) i) कबीर बीजक।

ii) कबीर ग्रंथावली।

(2) i) कबीर इस्लामी दर्शन की भाँति 'परम सत्य' को अल्लाह, खुदा, हजरत तथा पीर कहते हैं।

ii) वेदांत दर्शन से प्रभावित वे, 'परम सत्य' को अलख (अहश्य), निराकर, ब्रहमन् तथा आत्मन् भी कहते हैं।

(3) i) कबीर कहते हैं कि दोनों ही भुलावे में हैं तथा इनमें से कोई एक राम को प्राप्त नहीं कर सकता।

ii) वे अपना संपूर्ण जीवन तर्कहीन विवादों में बिता देते हैं।

(4) i) कबीर के विचार तर्कपूर्ण हैं। उन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक अंधविश्वासों पर ज़बरदस्त तार्किक प्रहार किए हैं।

ii) आज के युग में कबीर के विचारों का अनुसरण करके सामाजिक तथा धार्मिक समानता को प्राप्त किया जा सकता है। वस्तुत: कबीर का दर्शन 'तार्किक' है।

(16)

(1) i) पाँचवी रिपोर्ट भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन तथा क्रियाकलापों के बारे में तैयार की गई थी।

ii) इस रिपोर्ट में जमीदारों तथा रैयतों की अर्जियाँ भिन्न जिलों के कलक्टरों की रिपोर्ट एवम् बंगाल और मद्रास के राजस्व तथा न्यायिक प्रशासन पर लिखित टिप्पणियाँ सम्मिलित की गई थीं।

(2) i) पाँचवी रिपोर्ट में परंपरागत ज़मींदारी सत्ता के पतन का वर्णन बढ़ा चढ़ा कर किया गया हैं।

ii) जिस स्तर पर ज़मींदार अपनी ज़मीनें खो रहे थे, उसके बारे में वर्णन अतिरंजित था।

iii) साल दर साल जागीरों के टूट जाने से ज़मींदारों की हालत बिगड़ती जा रही थी।

(3) i) चूंकि पाँचवीं रिपोर्ट लिखने वाले कंपनी के कुप्रशासन की आलोचना करने के लिए कटिबद्ध थे अत: इसके स्पष्टीकरण तथ्यों से परे थे।

ii) ज़मींदारियाँ की वास्तविक स्थिति का आकलन निश्चित रूप से अतिरंगित है।

iii) ज़मींदारियाँ नीलाम होने के बाद भी ज़मींदार येन-केन-प्रकोरण अपनी ज़मींदारी को बचाने में कामयाब हो जाते थे। इसके परिणामस्वरूप वे बहुत मामलों में ही विस्थापित हो पाते थे।

अथवा

(1) i) सामानय जीवन तथा रोजमर्रा की गतिविधियाँ अस्त–व्यस्त हो गई थीं।

ii) रोजाना इस्तेमाल की आम चीजें भी मिलनी मुश्किल हो गई थीं।

(2) i) लोग शिकायत कर रहे थे कि बाज़ारों में कद्दू तथा बैंगन नहीं मिल पा रहे थे।

ii) ग़रीब तथा मध्य वर्ग के हालात बिगड़ते जा रहे थे।

iii) शहर में स्थित बाग बगीचाँ से कुछ माल चंद इलाकों तक पहुँच पाता था, लेकिन उसे अमीर लोग ही खरीद पाते थे।

(3) i) पानी भरने वालों ने पानी भरपा बंद कर दिया था।

ii) ग़रीब शुरफ़ा (कुलीन लोग) स्वयं घड़ों में भरकर लाते थे तब कहीं जाकर धर में खाना बनता था।

iii) शहर गंदगी, मौत तथा बीमारियाँ से ग्रसित हो गया था। किसी भी वक्त शहर में महामारी का प्रकोप होने की सम्भावना बढ़ गई थी।

भारत का रेखा-मानचित्र (राजनीतिक)

Outline Map of India (Political)

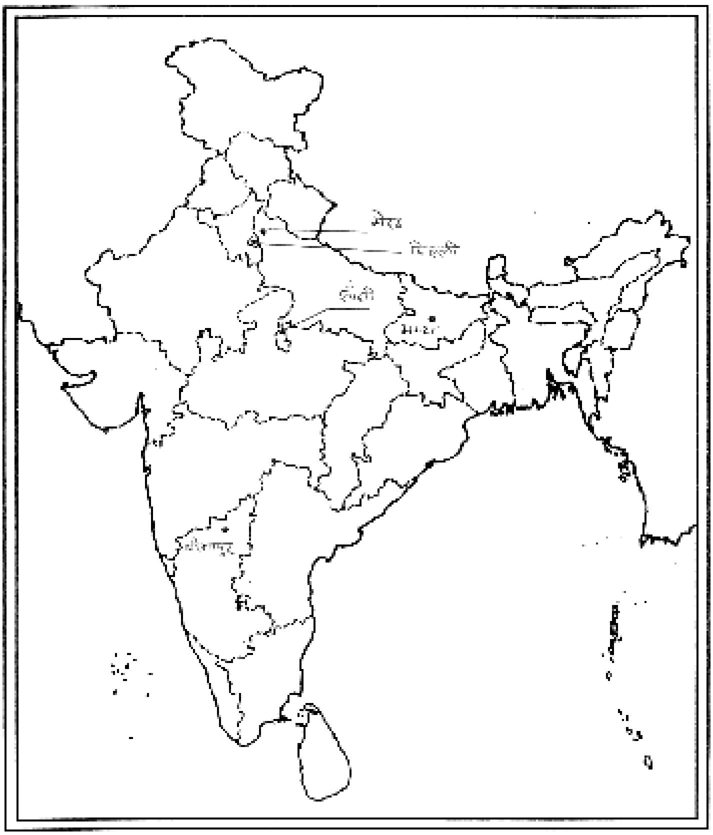

(18) अ) बनावली

ब) आगारा

स) अमृतसर

द) मगध

य) विजयनगर